घर

2006 में 2550वीं बुद्ध जयंती के अवसर पर, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, भारत और बांग्लादेश से आए दो सौ पचास थेरावादिन भिक्षु बोधिवृक्ष के नीचे टिपिटका का जाप करने के लिये एकत्र हुए। सात सौ सालों में पहली बार यह ऐतिहासिक घटना घटी कि अन्तर्राष्ट्रीय थेरावादिन संघ ने एक साथ मिलकर बुद्ध के शब्दों को भजा उनके निवार्ण स्थल पर। बोधगया के मठाधीशों ने एक परिषद् बुलायी और उसमें इस बात का निर्णय लिया गया कि भारत में बुद्ध सासन के विकास, आम तौर पर थेरावादिन मत, और सम्पूर्ण विश्व की शान्ति को बढ़ावा देने के लिये सालाना एक जप समारोह का आयोजन किया जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद् अब प्रतिवर्ष इस घटना का आयोजन करती है। अगला समारोह 2 दिसम्बर 2010 से 12 दिसम्बर 2010 तक होगा।

इस जाप समारोह से अर्जित सद्प्रभाव समस्त संवेदनशील प्राणियों को समर्पित हो।

मिशन

अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद्

10 मई 2008 को औपचारिक रूप से लागू किया गया परिषद् के संविधान में निर्धारित परिषद् का मिशन निम्नलिखित है :

- बोधगया में, जहाँ भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी, या दूसरे पवित्र स्थलों पर भगवान बुद्ध के पवित्र ग्रन्थों, जिन्हें पाली टिपिटका के नाम से जाना जाता है, के सालाना जाप का समर्थन करना, प्रोत्साहित करना और आयोजन करना।
- सम्पूर्ण धरा से दाताओं और संरक्षकों की तलाश करना और हर साल सालाना टिपिटका जाप समारोह के अवसर पर थेरावादिन परम्परा के महासंघ को इक्ट्ठा करना।
- आर्यदेश की पूरी पवित्र भूमि में बुद्ध की मूलभूत शिक्षा को फैलाना और इस संसार के समस्त संवेदनशीन प्राणियों और सम्पूर्ण ब्रह्मांड को सद्प्रभाव समर्पित करना।
- भगवान बुद्ध के धर्मोपदेश और दर्शन के माध्यम से समस्त मानवता के लिये शान्ति, सद्भाव और भाईचारा प्राप्त करने में मदद करना।
- सम्पूर्ण धरा के थेरावादिन संघ के बीच सहयोग, एकता और सद्भावना को बढ़ावा देना।
- सद्भावना रखने वाले संसार भर के पुरूष और स्त्रियों के सहयोग के माध्यम से समस्त प्राणियों के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देना।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य बुनियादी आवश्यकताएँ उपलब्ध कराने के माध्यम से समाज कल्याण को बढ़ावा देना।
- ऐसे दूसरे संगठनों, न्यासों, अध्ययन केन्द्रों, परोपकारी संस्थाओं और मठों को सहयोग देना और समर्थन करना जो ऐसी गतिविधियों में संलग्न हैं जैसा कार्य करना पाली टिपिटका, जाप अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् का उद्देश्य है।
- बौद्ध सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करने हेतु सम्बन्धित साहित्य प्रकाशित और वितरित करना एवं अन्य सहायक सामग्री उपलब्ध कराना।

हम भारत के कानूनों के तहत एक पंजीकृत न्यास हैं।

परिषद् के सदस्य

अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद्

परिषद् के सदस्य थेरावादिन देशों, जिनका बोधगया में एक विहार है (साधारण सदस्य) और वे जिनका नहीं है (विशेष सदस्य), के संघ से लिये जाते हैं। परिषद् के सदस्यों की वर्तमान सूची निम्न है :

अध्यक्ष

- माननीय यू न्यानिन्दा, बर्मी विहार, बोधगया के मठाधीश

उपाध्यक्ष

- माननीय चलौंग चंदासिरी, सचिव, वाट थाई, बोधगया

परिषद्

- मठाधीश माननीय सदानंद महाथेरा, अखिल भारतीय भीखू संघ
- माननीय प्रज्ञादीप भंते, विकल्प – अखिल भारतीय भीखू संघ
- माननीय डॉ. जरन, वाट थाई मगध विपासना केन्द्र, विकल्प – थाईलैण्ड
- माननीय सुन्दरा, होली लैण्ड विहार, विकल्प – म्यांमार
- माननीय कल्याण प्रिया महाथेरा, बांगलादेश बौद्ध मठ, बोधगया
- माननीय पोयी मेटा, कंबोडियन मंदिर, बोधगया
- माननीय ओंटा, लाओस के संघ के प्रतिनिधि, बोधगया
- माननीय वो वान साओ, विएतनाम के संघ के प्रतिनिधि, सारनाथ
- वैंगमो गेलेक, लाइट ऑफ बुद्धधर्म फाउंडेशन – भारत

न्यासी

- माननीय अनुरूद्ध, रॉयल वाट थाई बोधगया
- माननीय आनन्द भंते, बोध सोसायटी
- श्रीमान राजीव शर्मा, एडवोकेट

संविधान

अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद्

संगठन का नाम अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद् होगा जिसका उल्लेख आगे से 'परिषद्' नाम से किया गया है।

1. लक्ष्य और उद्देश्य

1. बोधगया में, जहाँ भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी, या दूसरे पवित्र स्थलों पर भगवान बुद्ध के पवित्र ग्रन्थों, जिन्हें पाली टिपिटका के नाम से जाना जाता है, के सालाना जाप का समर्थन करना, प्रोत्साहित करना और आयोजन करना।
2. सम्पूर्ण धरा से दाताओं और संरक्षकों की तलाश करना और हर साल सालाना टिपिटका जाप समारोह के अवसर पर थेरावादिन परम्परा के महासंघ को इक्ट्ठा करना।
3. आर्यदेश की पूरी पवित्र भूमि में बुद्ध की मूलभूत शिक्षा को फैलाना और इस संसार के समस्त संवेदनशीन प्राणियों और सम्पूर्ण ब्रह्मांड को सद्प्रभाव समर्पित करना।
4. भगवान बुद्ध के धर्मोपदेश और दर्शन के माध्यम से समस्त मानवता के लिये शान्ति, सद्भाव और भाईचारा प्राप्त करने में मदद करना।
5. सम्पूर्ण धरा के थेरावादिन संघ के बीच सहयोग, एकता और सद्भावना को बढ़ावा देना।
6. सद्भावना रखने वाले संसार भर के पुरूष और स्त्रियों के सहयोग के माध्यम से समस्त प्राणियों के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देना।
7. स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य बुनियादी आवश्यकताएँ उपलब्ध कराने के माध्यम से समाज कल्याण को बढ़ावा देना।
8. ऐसे दूसरे संगठनों, न्यासों, अध्ययन केन्द्रों, परोपकारी संस्थाओं और मठों को सहयोग देना और समर्थन करना जो ऐसी गतिविधियों में संलग्न हैं जैसा कार्य करना पाली टिपिटका, जाप अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् का उद्देश्य है।
9. बौद्ध सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार करने हेतु सम्बन्धित साहित्य प्रकाशित और वितरित करना एवं अन्य सहायक सामग्री उपलब्ध कराना।

2. शक्तियाँ

1. भारत और उसके किसी राज्य में स्थित भूमि, भवन और किसी निश्चित कार्यकाल या विवरण वाली वंशानुगत सम्पत्ति और ऐसी भूमि, भवन और वंशानुगत सम्पत्ति या उससे जुड़े अधिकार खरीद, लीज, अदला–बदली या अन्य विधि द्वारा अधिग्रहित करना और उसपर निर्माण कार्य करना और/या उसके सुधार कार्य को बरकरार रखना।
2. क्रय करना या दूसरी तरह प्राप्त करना, अदला–बदली करना, समर्पित कर देना, लीज पर उठाना, बंधक बनाना, कीमत वसूल करना या दूसरी तरह का कोई सौदा और किसी भी प्रकृति की दोनों वास्तविक और व्यक्तिगत सम्पत्ति का निपटारा करना।
3. उधार लेना, इक्ट्ठा करना या धन का भुगतान प्राप्त करना इस ढंग से जो उपयुक्त समझा जाए और उसी तरह से दुबारा, अदायगी के लिये या किसी कर्ज, उत्तरदायित्व, अनुबंध, गारंटी या परिषद् द्वारा किसी भी तरह अपने ऊपर लिया गया या दर्ज किया गया दूसरे करार को पूरा करने हेतु, प्राप्त करना।
4. निकालना, बनाना, स्वीकार करना, समर्थन करना, हटाना, निष्पादित करना और प्रौमिसरी नोट, एक्सचेंज बिल और दूसरे परक्राम्य या हस्तांतरणीय उपकरणों के बिल इशू करना।
5. किसी भी सरकार या प्राधिकारी के साथ, जो स्थानीय हो या कोई दूसरा, किसी भी व्यवस्था में प्रविष्ट होना, जो कि परिषद् के लक्ष्यों और उद्देश्यों के अनुकूल मानी जाए, और ऐसी किसी भी सरकार या प्राधिकारी से ऐसे कोई भी अधिकार, विशेषाधिकार और रियायतें प्राप्त करना जो वांछनीय समझी जाती हैं, और ऐसी किसी भी व्यवस्था, अधिकार, और विशेषाधिकार और रियायतों को हासिल करना और तदानुसार कार्य करना।
6. परिषद् के पैसे को समय–समय पर इस तरह से व्यवस्थित करना और निवेश करना कि वह सही समझा जाए।

7. उनके लिये या न्यासी के रूप में कार्य करना और कोई भी ऐसा कार्य या चीज करनी जिसका सम्बन्ध किसी न्यास और/या कोष से उठने वाले मामले से हो जिसे परिषद् के लाभ के लिये स्थापित किया जा सके।
8. किसी न्यास के लाभार्थी के पद को स्वीकार करना और इस पद से मिलने वाले लाभों को प्राप्त करना।
9. लक्ष्य और उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिये व्यक्तियों या अन्य कानूनी संस्थाओं के साथ अनुबंध कायम करना और इन लक्ष्य और उद्देश्यों के लिये कोई भी प्रासंगिक कार्य करना।
10. अनुबंध द्वारा किसी व्यक्ति को किसी पद पर समुचित उपाधि के साथ वेतन, पारिश्रमिक, कमीशन या शुल्क के एवज में या एक स्वैच्छिक आधार पर परिषद् के लिये काम करने हेतु नियुक्त करना और ऐसे कार्यकर्ताओं को आवश्यकतानुसार शक्तियाँ और जिम्मेदारियाँ सौंपना।
11. परिषद् के किसी भी लक्ष्य या उद्देश्य को पूरा करने के लिये, या किसी भी आकस्मिक चीज को वहीं का वहीं प्राप्त करने के लिये, या परिषद् की शक्तियों में से किसी का कार्यान्वयन करने हेतु कोई भी दूसरा कार्य करना जो आवश्यक हो या सुविधाजनक हो।
12. सभी मामलों में एक स्वायत्त कानूनी इकाई के रूप में कार्य करना।

3. दायित्व

1. परिषद् अपने स्वतः प्रतिबद्ध सदस्यों या कर्मचारियों या ठेकेदारों के कृत्यों के लिये उत्तरदायी नहीं होगी, जो स्पष्टतः या सांकेतिक रूप में परिषद् द्वारा प्राधिकृत नहीं हैं।

4. सदस्यता और प्रारम्भिक सदस्यता के लिये योग्यता

1. परिषद् की सदस्यता थेरावादिन परम्परा के भीतर किसी भी देश जो बोधगया में एक मठ नियोजित करता है ('साधारण सदस्य'), के प्रतिनिधि के लिये खुली होगी, या किसी दूसरे देश के प्रतिनिधि के लिये जहाँ बड़ी संख्या में थेरावादिन भिक्षु निवास पाते हैं ('विशेष सदस्य')। इस दस्तावेज में आगे से साधारण और विशेष सदस्यों का उल्लेख सामूहिक रूप से बतौर 'सदस्य' किया गया है।
2. परिषद् विशेष सदस्यों के रूप में एक प्रतिनिधि श्रीलंका से और एक प्रतिनिधि लाइट ऑफ बुद्धधर्म फांउडेशन इंटरनेशनल से भी आमंत्रित करेगी।
3. सदस्यों की सूची जो परिषद् की प्रारम्भिक सदस्यता बनाती है इस संविधान के हस्ताक्षर कर्ता हैं।
4. परिषद् की सदस्यता के आगे के उम्मीदवारों को सदस्यता हेतु दिये गए आवेदन पत्र की परीक्षा और उम्मीदवार के क्रेडेंशियल्स की परिषद् के बहुमत से मंजूरी के बाद ही सदस्यता मिलेगी।
5. प्रत्येक सदस्य को एक योग्य विकल्प को नियुक्त करने की अनुमति होगी जो अंग्रेजी या हिन्दी में प्रवीण हो ताकि उसके स्थान पर सभाओं में भाग ले सके और मतदान कर सके।
6. परिषद् के उपाध्यक्ष द्वारा सदस्यों और उनके निर्दिष्ट विकल्पों का एक रजिस्टर रखा जाएगा जिसमें प्रत्येक सदस्य और विकल्प का नाम, पता, ई–मेल एड्रेस, और टेलिफोन नम्बर हो।

5. मतदान और कोरम (सदस्यों की निर्दिष्ट संख्या) और बैठकों का आयोजन

1. परिषद् द्वारा लिये गए सभी निर्णय साधारण बहुमत से होंगे उस समय तक जबतक कि ऐसे अधिकारों का उपयोग बौद्धधर्म के सिद्धान्तों, बौद्ध परम्पराओं और व्यवहार के अनुरूप हो।
2. साधारण सदस्यों और विशेष सदस्यों को एक–दूसरे जैसा ही वही मतदान का अधिकार होगा।
3. बैठकें सभी सदस्यों को कम–अज–कम सात दिनों का लिखित नोटिस देकर बुलायी जा सकती हैं यदि विशेष सदस्यों को ई–मेल द्वारा सूचित कर दिया जाए तो। इस पर भी सहमति है कि आयोजन समिति की बैठकें तीन दिनों के नोटिस पर बुलायी जा सकती हैं।

4. किसी बैठक के लिये सदस्यों की निर्दिष्ट संख्या कम–अज–कम परिषद् के साधारण सदस्यों की 50% होगी।
5. विशेष सदस्य परिषद् की बैठकों में टेलीकांफ्रेन्सिंग, वीडियोकोंफ्रेंसिंग, या दूसरे एलेक्ट्रौनिक साधनों के माध्यम से भाग ले सकते हैं और वे सभी प्रयोजनों के लिये बैठक में उपस्थित माने जाएँगे जिसमें सदस्यों की निर्दिष्ट संख्या पूरी करना (कोरम बनाना) भी शामिल है।

6. पारिश्रमिक

1. परिषद् द्वारा किसी भी सदस्य को जेबखर्च के अतिरिक्त कोई पारिश्रमिक या पैसे या पैसे की कीमत का कोई दूसरा लाभ नहीं दिया जाएगा ।

7. परिषद् के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष

1. हर तीसरे साल परिषद् अपने सदस्यों में से बहुमत से एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष का चुनाव करेगी।
2. अध्यक्ष और उपाध्यक्ष परिषद् के साधारण सदस्य होंगे।
3. अध्यक्ष को परिषद् की बैठकों की अध्यक्षता करने का भार सौंपा जाएगा।
4. मतों की समानता की स्थिति में अध्यक्ष को एक सेकेन्ड का या मत डालने का हक है।
5. उपाध्यक्ष को परिषद् की बैठकें बुलाने का भार सौंपा जाएगा।
6. उपाध्यक्ष करेगा

i) परिषद् की किसी भी बैठक का एजेंडा तैयार करेगा

ii) सुनिश्चित करेगा कि सभी सदस्यों को बैठक से पहले नियत समय के भीतर इस तरह के एजेंडे की प्रतियाँ प्राप्त हो जाएँ।

iii) सुनिश्चित करेगा कि वर्तमान बैठक की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण तैयार कर लिया जाए और सभी सदस्यों में बांट दिया जाए

iv) सभी बैठकों की कार्यवाही के विवरण की पुस्तिका रखेगा

v) किसी भी नई बैठक के प्रारम्भ होने से पहले उससे पहली बैठक की विवरण पुस्तिका पर बतौर मंजूर रिकॉर्ड अध्यक्ष के हस्ताक्षर करवाएगा

vi) उपाध्यक्ष अपने दायित्वों में हाथ बंटाने के लिये एक सचिवीय सहायक नियुक्त कर सकता है।

vii) कोई भी सदस्य उपाध्यक्ष से लिखित रूप में अनुरोध पेश करने पर दो सप्ताह के भीतर परिषद् की एक बैठक बुलाने के लिये कह सकता है, और ऐसी बैठक के कार्यक्रम में किसी भी विशिष्ट बिन्दु पर चर्चा का अनुरोध कर सकता है।

8. सदस्यों की जवाबदेही

1. सदस्य परिषद् के ऋण और देनदारियों की दिशा में योगदान, या परिषद् के भंग हो जाने से उत्पन्न खर्च, शुल्क, और व्यय के लिये जवाबदेह नहीं होंगे।

9. आयोजन समिति

1. जहाँ भी, वार्षिक टिपिटका जाप समारोह परिषद् द्वारा आयोजित किया गया है, ऐसा कहा जाएगा, इस काम में उसकी मदद करने हेतु परिषद् अधिकतम दो वर्षों के लिये एक आयोजन समिति नियुक्त करेगी।
2. आयोजन समिति के अधिकतम सदस्य परिषद् में प्रतिनिधित्व करते प्रत्येक देश से रोटेशन में लिये जाएँगे। संदेह से बचाने के लिये, आयोजन समिति के सदस्य परिषद् के सदस्य हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते हैं।
3. परिषद् जाप समारोह आयोजित करने में मदद करने के लिये सीधे एक जनरल को–ओरडिनेटर की नियुक्ति कर सकती है।

10. वार्षिक टिपिटका जाप समारोह से सम्बन्धित, परिषद् और आयोजन समिति की शक्तियाँ और कर्तव्य

1. परिषद् वार्षिक टिपिटका जाप समारोह के निम्नांकित तत्वों के लिये सीधी उत्तरदायी होगी :

   i) समारोह में भजने के लिये ग्रन्थों का चुनाव और संस्करण
   ii) समारोह के लिये प्रायोजकों की मंजूरी और सहयोग
   iii) समारोह के लिये प्रचार की मंजूरी
   iv) उद्घाटन और समापन समारोह का सामान्य आचरण
   v) जाप समारोह का सामान्य वातावरण

2. आयोजन समिति वार्षिक जप समारोह के दूसरे सभी तत्वों के आयोजन के लिये उत्तरदायी होगी, जिनमें शामिल हैं, बिना किसी सीमा के

   i) सुनिश्चित करना कि वार्षिक टिपिटका जाप समारोह में भाग लेने वाले सभी भिक्षुओं के भोजन और स्थानीय निवास की व्यवस्था हो, और सभी प्रतिभागियों की आवश्यक यात्रा व्यवस्था करने में मदद करना।
   ii) वार्षिक टिपिटका जाप समारोह के आयोजन का दोनों स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस के माध्यम से प्रचार करना।
   iii) वार्षिक टिपिटका जाप समारोह के उद्घाटन समारोह के लिये कार्यक्रम पर सहमति देना।
   iv) वार्षिक टिपिटका जाप समारोह के उद्घाटन दिवस के लिये वी आई पी अतिथियों की व्यवस्था करना।
   v) वार्षिक टिपिटका जाप समारोह हेतु दस दिनों के लिये धर्म प्रवचनों का चयन और आयोजन करना।
   vi) चयनित प्रतिभागियों और विशिष्ट अतिथियों को वार्षिक टिपिटका जाप समारोह का काफी अग्रिम निमंत्रण भेजना।
   vii) प्रत्येक प्रतिभागी के लिये पंजीकरण कार्ड तैयार करना।
   viii) पंजीकरण फॉर्म के आधार पर प्रत्येक पंजीकरण करवाने वाले पर जानकारी एकत्र करना।
   ix) सभी प्रतिभागियों का एक रिकॉर्ड रखना।

11. कोष और कोषाध्यक्ष की नियुक्ति

1. परिषद् के कोष धर्मार्थ दान, ब्याज, न्यासों से मिले लाभ, टेस्टामेंट, अनुदान के कामों, और परिषद् द्वारा निर्णीत किसी भी अन्य श्रोतों से प्राप्त किये जाएँगे बशर्ते वह प्रस्ताव परिषद् द्वारा सामान्य बैठक में पारित किया गया हो।
2. क्लॉज 11 (ए) के भीतर प्राप्त सारा धन जैसे का तैसा जल्द से जल्द सम्भव तिथि तक परिषद् के समुचित बैंक खाते में जमा कर दिया जाएगा। धन प्राप्ति की रसीद तुरन्त जारी की जाएगी।
3. परिषद् के कोष का प्रबंधन करने हेतु परिषद् अपने साधारण सदस्यों के बीच में से एक कोषाध्यक्ष का चुनाव करेगी। इस नियुक्ति का कार्यकाल परिषद् के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की नियुक्ति के कार्यकाल के समवर्ती होगा।

12. सदस्यों को कोई मुनाफ़ा नहीं मिलना

1. परिषद् की आय और सम्पत्ति से जो कुछ भी लिया जाएगा वह इस दस्तावेज में वर्णित परिषद् के लक्ष्य और उद्देश्यों को बढ़ावा देने की दिशा में ही पूरी तरह से लगाया जाएगा, और उसका कोई भी हिस्सा प्रत्यक्ष रूप से या परोक्ष रूप से, लाभांश के रूप में, बोनस या दूसरे किसी भी तरह के मुनाफे बतौर परिषद् के सदस्यों को भुगतान या ट्रांसफर नहीं किया जाएगा बशर्ते यथार्थ में परिषद् के लिये दी गई सेवाओं के बदले में किसी भी अफसर या परिषद् के सेवक के, या किसी सदस्य के पारिश्रमिक के भुगतान को या परिषद् के किसी भी सदस्य द्वारा दिये गए परिसर के लिये समुचित और सही किराये को नेकनीयती के साथ नहीं रोका जाता है।

13. विघटन और अधिशेष सम्पत्ति

1. चार से कम सदस्य होने की स्थिति में परिषद् तोड़ी या भंग की जा सकती है।
2. यदि परिषद् के तोड़ देने या भंग करने पर उसके ऋण और देनदारियों को पूरा कर देने के बाद कोई भी सम्पत्ति किसी भी तरह की बचती है तो वह सदस्यों को नहीं दी जाएगी या उनके बीच नहीं बाँटी जाएगी, बल्कि किसी परोपकारी संगठन या संगठनों जिनके उद्देश्य परिषद् के उद्देश्यों के समान ही होंगे, स्थानांतरित कर दी जाएगी।

14. संशोधन और संविधान की व्याख्या

1. एक विशेष प्रस्ताव पारित करके जो कम–अज–कम तीन चौथाई (3/4) उपस्थित सदस्यों द्वारा या पौक्सी द्वारा मतदान करके, या किसी भी बैठक, जिसमें प्रस्तावित संशोधन की लिखित सूचना कम–अज–कम तीस दिनों पहले दे दी गई हो, डाक द्वारा मतदान करके किया गया हो, संविधान में संशोधन किया जा सकता है।

10 मई 2008 को इस पर हस्ताक्षर किये गए द्वारा

____

बांगलादेश
माननीय कल्याण प्रिया थेरा, मठाधीश, बांगलादेश बौद्ध मठ (प्रतिनिधि)

____

कम्बोडिया
वेन चान सेविन कम्बोडियन मंदिर, कम्बोडियन मंदिर, बोधगया (विकल्प)

———————————————————————

भारत
मठाधीश माननीय सदानंद मथेरा (प्रतिनिधि)
माननीय प्रिया पाल भंते, चकमा मंदिर, बोधगया (विकल्प)

————————————————————————

लाओस
माननीय बूंधम, लाओस के प्रतिनिधि (विकल्प)

——————————————————————————

एलबीडीएफआई
श्रीमती वांगमो डिक्सी, लाइट ऑफ बुद्धधर्म फाउंडेशन – इण्डिया (प्रतिनिधि)

———————————————————————————

म्यांमार
माननीय सुन्दरा, द होली लैण्ड विहार के मठाधीश, बोधगया (विकल्प)

—————————————————————————

थाईलैण्ड
माननीय कंडासिरी, सचिव, वॉट थाई, बोधगया (प्रतिनिधि)
डॉ. जरन, वॉट थाई मगध विपासना, बोधगया (विकल्प)

वार्षिक टिपिटका जाप समारोह का संगठन

2010–11 के लिये, बांगलादेश और लाओस के संघ इस प्रतिष्ठित समारोह के मुख्य आयोजक होंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय टिपिटका जाप परिषद् एक प्राथमिक दायित्व वार्षिक जाप समारोह के शासी निकाय के रूप में कार्य करना है। विशेष रूप से, परिषद् समारोह के निम्नांकित तत्वों के लिये सीधी जिम्मेदार है :

1. समारोह में भजने के लिये ग्रन्थों का चुनाव और संस्करण
2. समारोह के लिये प्रायोजकों की मंजूरी और सहयोग
3. समारोह के लिये प्रचार की मंजूरी
4. उद्घाटन और समापन समारोह का सामान्य आचरण
5. जाप समारोह का सामान्य वातावरण

हर दूसरे साल, एक भिन्न राष्ट्रीय समूह को खुद समारोह आयोजित करने, और इस कार्य को पूरा करने हेतु एक संगठन एवं कार्यवाही समिति निर्मित करने के लिये कहा जाता है। यात्रा व्यवस्था, आवास, भोजन, टेंट जानकारी, पंजीकरण और उद्‌घाटन एवं समापन समारोह का आचरण सरीखा समारोह की गतिविधियों का दैनिक ब्योरा, स्वयं परिषद् के मार्गदर्शन में, आयोजन समिति की सीधी जिम्मेदारी है।

देश के प्रतिनिधि

अन्तर्राष्टीय टिपिटका जाप परिषद्

अन्तर्राष्टीय टिपिटका जाप परिषद् ने निम्नलिखित प्रतिनिधियों को मंजूरी दे दी है :

लाओस

अध्यक्ष : अजाह्‌न खामा पनयाविजित
उपाध्यक्ष : श्रीमान बूनटिवी (धार्मिक विभाग के उपसचिव)
सामान्य सचिव : अजाह्‌न फ्रा सुखित (लाओस बौद्ध एसोशियेशन)

थाईलैण्ड

डॉ. डिसाफोल चांसिरी (अध्यक्ष एलबीडीएफआई–थाईलैण्ड)
डॉ. कनोक, बुद्धमोंथोन के निदेशक
बाद में मनोनीत होने वाले अन्य नाम

कंबोडिया

मंजूरी दी जानी है

भारत

डॉ. बी. एन. खांडेकर नागपुर से
माननीय बोधिपालो औरंगाबाद से
माननीय राहुला बोधि मुंबई से
माननीय डॉ. ज्ञानदीप नागपुर से
माननीय अख्यानंद त्रिपुरा से
माननीय अगाधम्मा अरूनाचल प्रदेश से

म्यांमार

मंजूरी दी जानी है

बांगलादेश

मंजूरी दी जानी है

वियतनाम

मंजूरी दी जानी है

टिपिटका जाप की योजना

छठा वार्षिक टिपिटका जाप समारोह 2 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2010 तक आयोजित किया जाएगा। पूरा संघ सुतापिटक्के मझिमानिकायो उपारिपन्नसापाली (Suttapitakke Majjhimanikayo Uparipannasapali) में से जाप करेगा।

कार्यक्रम की समय सूची इस प्रकार है :

सुबह 06:00–06:45 तक	जलपान (कलाचक्र गाउण्ड्स)
सुबह 07:00–09:00 तक	जाप
सुबह 09:00–09:15 तक	अवकाश
सुबह 09:15–11:00 तक	जाप
सुबह 11:00–1:00 तक	दोपहर का भोजन (कलाचक्र गाउण्ड्स)
दोपहर 01:30–03:30 तक	जाप
दोपहर 03:30–3:45 तक	अवकाश
दोपहर 3:45–5:00 तक	जाप
सायं 6:00–9:00 तक	पवित्र बोधिवृक्ष के नीचे वरिष्ट आचार्य द्वारा धर्म प्रवचन
रात्रि 9:00–4:00 तक	मुख्य मंदिर में 80 प्रतिभागियों के लिये रात्रि पर्यन्त ध्यान साधना

तीर्थयात्रा :
आयोजन के आखिरी दिन तीर्थयात्रा पर ले जाना समारोह की एक और विशेषता है। पिछले सालों में भिक्षुओं और आम जनता ने वैशाली, राजगीर और नालंदा की तीर्थयात्रा की है।

आवास और भोजन :
आयोजन समिति उन सभी भिक्षुओं, जप समारोह के लिये जिनके पंजीकरण की स्वीकृति और पुष्टि कर दी गई है, के लिये आवास की व्यवस्था करेगी। कृपया अपना पंजीकरण फॉर्म भेजने की याद रखें क्योंकि परिषद् केवल उन्हीं भिक्षुओं के लिये आवास की व्यवस्था कर सकती है जिनका पंजीकरण स्वीकार कर लिया गया है। स्वीकृति मिलने पर भिक्षु एक पंजीकरण संख्या प्राप्त करेंगे जिसका उपयोग भारत में यात्रा की बुकिंग के लिये किया जा सकता है (नीचे देखें) साथ ही साथ जो उन्हें समारोह के दौरान आवास और

भोजन की अनुमति प्रदान करता है। विस्तृत जानकारी बोधगया में पंजीकरण जानकारी तम्बू में प्रदान की जाएगी। भोजन कलाचक्र ग्राउण्ड में स्थित एक समर्पित भोजन हॉल में दिया जाता है।

पंजीकरण

केवल भिक्षु संघ के लिये पंजीकरण की आवश्यकता है क्योंकि आयोजन समिति भारत के भीतर उनके यात्रा खर्च को प्रायोजित करती है। टिपिटका जाप परिषद् आम प्रतिभागियों, जो समारोह में भाग लेने के इच्छुक हैं, सहित सबका स्वागत करती है, और जहाँ प्रतिभागियों से अनुरोध है कि यात्रा और आवास के लिये अपनी खुद की व्यवस्था कर लें, जलपान और दोपहर का भोजन प्रतिदिन सामान्य भोजन टेंट में प्रदान किया जाएगा।

पंजीकरण फॉर्म (दायाँ–क्लिक, 'सेव लिंक ऐज़' डाउनलोड करने हेतु)

टिपिटका जाप समारोह में भाग लेने के लिये, कृपया पंजीकरण फॉर्म प्रिंट करें और निम्नांकित पते पर वापस करें :

पता : पो. ऑ. बॉक्स 44 बोधगया, जिला – गया, 824231 भारत
ई–मेल : chantingcouncil@gmail.com

हम आभारी होंगे यदि सभी भिक्षु जो पंजीकरण के इच्छुक हैं, 5 नवम्बर 2010 तक पंजीकरण की प्रक्रिया को पूरी कर लें ताकि हम उनके भोजन और आवास की आवश्यक व्यवस्था कर सकें।

धर्म प्रवचन, सायं 6–9 तक

सायंकालीन धर्म प्रवचन जाप समारोह की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता बन गई है जो संघ के आम और संस्थापित दोनों तरह के सदस्यों को अवसर देती हैं कि वे थेरावादिन दुनिया की सभी परम्पराओं से विद्वान और सुविख्यात भंटीज (Bhantes) को बोधिवृक्ष के ही नीचे प्रवचन देता सुन सकें। इन प्रवचनों का अनुवाद अंग्रेजी और हिन्दी में किया जाता है ताकि ये अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुँच सकें।

2010 में, प्रत्येक रात्रि पवित्र बोधिवृक्ष के नीचे सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक दस धर्म प्रवचन होंगे। हमलोग आने वाले महीनों में वक्ताओं और उनकी जीवनियाँ पोस्ट करते रहेंगे। कृपया देखते रहें!

धर्म वक्ताओं की जीवनियाँ

माननीय अजाह्न जुमनिअन एक पारंपरिक थाई वन भिक्षु हैं। उन्होंने थाईलैण्ड में प्रसिद्ध आचार्यों के साथ विविध एकाग्रता प्रणालियों का अभ्यास किया है और दक्षता हासिल की है, एक धर्माधिकारी (ओझा) और आरोग्यकर्ता के रूप में प्रशिक्षित हैं, एक यायावर तपस्वी की भांति यात्रा की और गहन अन्तर्दृष्टि ध्यान साधना के पंडित बन गए। कोई फर्क नहीं पड़ता, किस तकनीक का प्रयोग हुआ है, वे आखिरकार विद्यार्थी को वापस अपने स्वयं के शरीर–मन प्रक्रिया की वास्तविक प्रकृति को देखने के अन्तर्दृष्टि अभ्यास की ओर

करूणा और मुक्त मन से प्रेरित करते हैं। अजाह्न जुमनिअन के संग होंगे माननीय अजाह्न विथून अजारसुपोह।

वह 3 दिसम्बर को बोलेंगे।

माननीय सितागु सयादव आशिन न्यानिसरा का जन्म 23 फरवरी 1937 को मध्य म्यांमर के थेगन शहर में हुआ था। बीस वर्ष की आयु में थेगन में उन्होंने एक बौद्ध भिक्षु के रूप में अपनी उच्च दीक्षा प्राप्त की। उन्होंने मांडाले में खिन–मा–गन पाली विश्वविद्यालय से बौद्ध सिद्धान्त में मास्टर की उपाधि अर्जित की और यंगून में संघ विश्वविद्यालय से विदेशी भाषा (अंग्रेजी) में डिप्लोमा कोर्स पूरा किया। 1965 में, निचले म्यांमर के डेल्टा क्षेत्र में उन्होंने बी बी एम कॉलेज की स्थापना की, और 1968 तक उस संस्था के प्रधानाचार्य और मुख्य प्रशासक के रूप में कार्य किया। 1968 में, उन्होंने अपना आवास ऊपरी म्यांमर में सेगेइंग हिल्स पर स्थानांतरित कर लिया और भिक्षुओं, अजागारीका, और नवसिखियों को बौद्धधर्म ग्रंथ पढ़ाने लगे। उन्होंने अपना अंग्रेजी का अध्ययन भी जारी रखा, और माननीय आशिन पंडिता आनिसखन सयादव के मार्गदर्शन में बौद्ध आचरण शास्त्र में प्रशिक्षण दिया। वे 1975 तक सेगेइंग हिल्स में रहे।

वर्ष 1975–78 के बीच, उन्होंने एकांतवास किया औंर मॉन स्टेट लोवर म्यांमर में थबैक अएंग तव–या के वन विहार में ध्यान साधना की। 1979 में, सेगेइंग हिल्स में उन्होंने अपने स्वयं के विहार, सितागू विहार की स्थापना की। 1981 में, उन्होंने एक ऐसी जल आपूर्ति प्रणाली का निर्माण कार्य शुरू किया जो सेगेइंग हिल्स के आठ सौ से अधिक विहारों और आठ हजार निवासियों को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराए। 1987 में, उन्होंने सेगेइंग के भिक्षुओं, ननों, नवसिखियों और गरीब लोगों के लिये एक पूर्ण सुसज्जित 100 बिस्तरों वाले अस्पताल का निर्माण कार्य शुरू किया।

1994 में उन्होंने, मिशनरी, भिक्षुओं और अजागारीका को बुद्ध के उपदेशों को फैलाना सिखाने और उसमें प्रशिक्षित करने के लिये, अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध अकादमी का निर्माण कार्य शुरू किया। 1981 में, सयादव ने दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया में छह देशों की अपनी पहली विदेश मिशनरी यात्रा की। तबसे उन्होंने दुनियाभर में तीस से भी ज्यादा देशों की बारह से ऊपर मिशनरी यात्राएँ पूरी की हैं। संयुक्त राष्ट्र के अपने दौरे के दौरान उन्होंने बहुत से विश्वविद्यालयों में लेक्चर दिया है। उन्होंने म्यांमार भाषा में अड़तीस किताबें और आलेख प्रकाशित किये हैं, अंग्रेजी में पांच पुस्तिकाओं और कई और पर काम जारी है।

वह 4 दिसम्बर को बोलेंगे, 6:30–8

माननीय अजाह्न फ्रा सोमचयी पुज्जामनो ने 20 वर्ष की आयु में वाट नौंगकीम तालुका पाखा जिला बाना नखोन्नायोक प्रांत में दीक्षा प्राप्त की। उसके बाद ध्यान साधना करने के लिये वह एक गुफा में दस सालों के लिये चले गए, और तब कई सालों के लिये चलते हुए आध्यात्मिक समाधि। 1976 में उनके माता–पिता ने श्राबुरी प्रांत में वाट पा सावंगबून के लिये भूमि दान कर दी। वह इसके प्रथम विहाराधिपति हैं।

वह 4 दिसम्बर को बोलेंगे, 8–9

माननीय अजाह्न मिटसुओ गवेसाको माननीय फ्रा बोधियाना थेरा (माननीय अजाह्न चाह) के एक जापानी शिष्य हैं। उनको 1975 में दीक्षा दी गई थी, और वाट पह नानाचार्ट के संस्थापकों में से एक थे। उन्होंने

बौद्ध धर्म में कई परिपाटियों का अनुभव किया है और तांग (कठोर अनुशासनी प्रणालियाँ) को थाईलैण्ड और विदेशों में कई समृद्ध और रहने में दुष्कर जगहों पर ले गए हैं।

वर्तमान में, वे वाट सुनांधावनाराम, बान था टायन, तालुका सेयोक, जिला सेयोक, कंचनाबुरी प्रांत के प्रमुख हैं। यह विहार वाट नौंग पाह पौंग, युबोन राजथानी प्रांत, थाईलैण्ड की 117वीं शाखा है।

माननीय का कहना है कि यह उनके लिये संयोगवश ही हुआ कि वे थाईलैण्ड गए और भदन्त अजाह्न चाह के शिष्यों में से एक के रूप में दीक्षा प्राप्त की। क्योंकि वे एक बच्चे थे, वे एक ही प्रश्न पूछते रहे : ''संतुष्ट जीवन क्या है?'' और सोचते रहे कि जीवन के लिये और अधिक मूल्यवान चीजें होनी चाहियें। उन्होंने अपनी मातृभूमि से भारत, नेपाल, ईरान और यूरोपियन देशों का एक लम्बा मिशन लिया। तत्पश्चात् यूरोप से अफ्रीका के लिये आगे बढ़ने के बजाय वे वापस भारत लौट आए। वहाँ, भारत में जब वे बोधगया पहुँचे और जब वे बुद्ध की प्रतिमा को ध्यान से देख रहे थे, उनको बुद्धधर्म का स्मरण हो आया और जो प्रश्न वे अपने पूरे जीवन भर पूछते रहे थे उसका उत्तर मिल गया :– पूर्ण सत्य हमारे खुद के शरीर और मन के भीतर है, सच्चा सुख हमारे मन में है और हर कोई दुःख पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसके बाद, उन्होंने बाहर से ढूँढना छोड़ दिया और अन्तर्दृष्टि विकसित करना प्रारम्भ किया। अक्टूबर 1996 से भदन्त अजाह्न मिटसुओ गवेसाको वाट सुनंधावनरम में आम जनता को अन्तर्दृष्टि ध्यान साधना और अनापानसती कक्षाएँ पढ़ाते रहे हैं।

वह 5 दिसम्बर को बोलेंगे

भदन्त फ्रा धम्ममूले सूरिन प्रांत, थाईलैण्ड के धर्मोपदेशक राज्यपाल हैं, और वाट सलालोई के मठाधीश हैं। डॉ. धम्ममूले महाचुलालौंकोर्नराजविद्यालय यूनीवर्सिटी, सूरिन कैम्पस के उपाध्यक्ष के रूप में भी काम करते हैं।

वह 6 दिसम्बर को बोलेंगे।

माननीय फ्राथीकर्ण सनौंग कतापुज्जो (लुआंग फोर) का जन्म बंदर के वर्ष 1944 में, मध्य थाईलैण्ड के सुपानबुरी प्रांत में किसानों के एक परिवार में हुआ था। उन्होंने 1964 में एक भिक्षु के रूप में दीक्षा ली और अपने दस शुरूवाती साल या तो थाईलैण्ड के जंगलों में भटकते हुए या गहन एकांत ध्यान साधना में बिताए। उन्होंने इसे धम्म प्रसार, विहारवासी प्रशिक्षण और धुतंग (यायावरी) रियात्तियों पर आधारित सामाजिक विकास का केन्द्रबिन्दु बनाने के उद्देश्य से 1974 में वाट संघदान (संघदाना मंदिर) की स्थापना की। वाट संघदान के अन्तर्गत इस समय देश में 30 से अधिक मंदिरों की एक शाखा प्रणाली है, भारत साथ ही साथ नेपाल में दो शाखाएँ शुरू कर रहा है, एक रेडियो नेटवर्क है संघदान धम्मा तकरीबन 25 प्रांतों में ऑपरेट कर रहा है, एक सेटेलाइट टेलीविजन स्टेशन एस बी बी टी वी, मुख्यतः एशिया में प्रसारण करता है, और अन्य परियोजनाओं के बीच एक थाई हर्बल अस्पताल का निर्माण कर रहा है।

वह 7 दिसम्बर को बोलेंगे।

माननीया मॅई ची सनसनी स्थिरासूता थाई बौद्ध परम्परा से एक लीडर हैं। एक अकेली माँ की बच्ची, वे परम्परागत सीमाओं को तोड़कर बाहर निकल आयी हैं। थाईलैण्ड में वे अब एक उल्लेखनीय हस्ती और एक

विश्वप्रसिद्ध शान्तिदूत के रूप में देखी जाती हैं। एक बौद्ध अनागारीका बनने से पहले वे एक मॉडल थीं। जब वे 27 वर्ष की थीं, उन्होंने अपना यश छोड़ने का निश्चय किया और दीक्षा ले ली। सात वर्षों तक धर्म का अध्ययन और अभ्यास करने के बाद उन्होंने जाना कि धम्म जीवन का दुःख हल कर सकता था। इसलिये, 1986 में, बैंकोक के दिल में उन्होंने एक ध्यान साधना समुदाय, सथीरा धम्मसथान, की स्थापना की। माननीया मॅई ची ने संबंध गृह परियोजना, माता–पिता स्कूल परियोजना, एक जेल मुलाकात प्रोग्राम, एक बौद्ध किंडरगार्डन स्कूल की नींव रखी है और साविका सिक्खालया धर्मा स्कूल की स्थापना की है।

वह 8 दिसम्बर को बोलेंगी।

माननीय अजाह्न फ्रा राज सिद्धिमुनि जिनका विधि द्वारा दिया गया नाम नानासमवारो भिक्खू था, थाईलैण्ड के खोनकॅाऐन जिले में पैदा हुए और वाट टैट अरम लाउंग, उसी जिले में राजकीय संरक्षण के तहत एक विहार, में अपनी उच्च दीक्षा ग्रहण की। 1985 में उन्होंने ग्रेड IX की अपनी पाली की परीक्षा उत्तीर्ण की और दर्शन में बी. ए. और तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन में एम. ए. कर लिया।

वे फ्रा धम्मा थीरा राजा महामुनि के निर्देश के तहत और माननीय डॉ. बुद्धान्त असाभा थेरा, अग्गामहा कामा थान आचार्य के मार्गदर्शन में फोर फाउंडेशन ऑफ माइंडफुलनेस के अनुसार विपास्सना ध्यान साधना में प्रशिक्षित हुए।

2005 में उनको एक धर्मोपदेशक रूप में द रॉयल क्लास ऑफ फ्रा राज सिद्धिमुनि VI की सम्मान सूचक उपाधि दी गई, और वर्तमान में सहायक विहाराधिपति हैं, और दूसरे अनेकों पदो के बीच बैंकोक में, राजकीय महाविहार वाट महाथट के अनुभाग 7 के कार्यकारी विपास्सना ध्यान साधना आचार्य और अध्यक्ष, और द ग्रेजुएट स्कूल महा चूला लौंकोर्न विश्वविद्यालय में बौद्ध फैकल्टी के विपास्सना ध्यान साधना आचार्य हैं।

वह 9 दिसम्बर को बोलेंगे।

माननीय आकार्या थून किप्पापन्यो (फ्रा बन्यापिसेन्थेरा) का जन्म 1935 में हुआ, और 1961 में एक भिक्षु के रूप में दीक्षित हुए। वह थाईलैण्ड के नौंग बुआ लाम फू प्रांत में वाट टाम क्लौंग पेइन के सुविख्यात भदन्त आकार्या खाओ एनालायो के शिष्य थे। अपने शुरूवाती सालों में, आकार्या थून ने विभिन्न वन स्थलों की यात्रा की और तबतक घम्म का अभ्यास किया जबतक कि उनको गहराई से अहसास नहीं हो गया और बुद्ध द्वारा सामने रखे गए सत्य को उस अनुसार समझ नहीं गए। 1985 में आकार्या थून ने उदोन थानी में प्रतिबद्ध अभ्यासकर्ताओं के बुद्ध के धम्म में प्रशिक्षित होने की एक साइट स्वरूप वाट पा बन कोह को बनाया और स्थापित किया। 2001 में, दोनो थाईलैण्ड और विदेशों में आकार्या थून के बेशुमार समर्पित अनुयायियों के असीम विश्वास से एक प्रभावशाली स्तूप खड़ा हुआ। उन्होंने धर्म अभ्यास पर बीस से ऊपर बहु प्रशंसित पुस्तकें दोनो थाई में लिखीं, और अंग्रेजी में अनुवाद किया। आकार्या थून ने व्यक्तिगत सती, समाधि, और पन्ना (सावधानी, सचेत और ध्यान केन्द्रित एकाग्रता, और अन्तर्दृष्टि ज्ञान) को विकसित करने और व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने में उनके उपयोग पर जोर दिया। भदन्त आकार्या थून का 2009 में निधन हो गया। उनकी याद में यहाँ उनकी तस्वीर है।

भदन्त आकार्या चेइया अपिचायो का जन्म लोई एट प्रांत के नौंग म्यूएन टेन में हुआ था। आकार्या चेइया ने श्री नकारिनतराविरोद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि अर्जित की। भदन्त आकार्या थून खिप्पापान्यो के

संरक्षण में 12 मार्च 1985 को वे एक भिक्षु के रूप में दीक्षित हुए। आकार्या चेइया धम्म सेमिनार के माध्यम से यह विधि विद्यार्थियों, सरकारी कर्मचारियों, और अन्य लोगों को बतलाने लगे। इसका सारांश है ''गलती से उसे सुधारना सीखो।'' अकार्या चेइया अकार्या थून के सभी अहम् प्रयासों में एक प्रमुख थे। उनमें आकार्या थून के धार्मिक उपदेशों को उनकी पूरी सम्पूर्णता में पुनः प्रसारित करने की प्रतिभा है। 2002 में, अकार्या चेइया वाट पा टेड नम पू के विहाराधिपति बने। तीन वर्षों बाद, 2006 में बनफुए प्रांत में संघ साथ ही साथ धर्मोपदेशक जिला अधिकारी द्वारा उनको फ्रा खूपियासिलाजन का उच्च सम्मान दिया गया।

वह 10 दिसम्बर को बोलेंगे।

माननीय फ्राक्रू फवनाधम्माफिनन (फ्रा बुंथन सीसुक) का जन्म 1 जुलाई 1963 को, थाईलैण्ड के जिला रूटन्नाबुरी, सूरिन प्रांत में हुआ था। उन्होंने वाट इसान मंदिर, बन नोनसन, तालुका नौंग लुआंग, जिला रूटन्नाबुरी, सूरिन प्रांत में 11 मई 1984 को एक भिक्षु बनने के लिये दीक्षा ली। 1985 में वे वासा में समाक्खीधुम वन मंदिर, लोपबुरी में रहने चले गए। 1986 से 1988 तक वे सुपानबुरी में वाट उथोंग मंदिर में रहे। 1996 से आजतक वे वाट ना लुआंग विहार उदोनथानी में रहते हैं।

1 दिसम्बर 1993 को वे वाट ना लुआंग विहार के विहाराधिपति बन गए। प्रत्येक वर्ष, वाट ना लुआंग विहार, भगवान विहाराधिपति फ्रा बुंथन के नेतृत्व में धर्म सिखाने के लिये थाईलैण्ड के आस–पास भिक्षुओं का समूह भेजता है।

वह 11 दिसम्बर को बोलेंगे।

सभी प्रतिभागियों के लिये यात्रा सूचना

यात्रा कोष :

द लाइट ऑफ बुद्धधर्म फांउडेशन इंटरनेशनल भारत के भीतर उन सभी भिक्षुओं के यात्रा खर्च को वहन करेगी, पांचवें अन्तर्राष्ट्रीय पाली तिपिटका पाठ समारोह में शामिल होने के लिये जिनका पंजीकरण स्वीकार कर लिया गया है। सभी सुनिश्चित पंजीकरणकर्ताओं को एक पंजीकरण संख्या जारी की जाएगी भारतीय ट्रेवेल एजेंट के विवरण के साथ जो सारी यात्रा व्यवस्थाएँ करेगा। फांउडेशन सीमित संख्या में, राष्ट्रीय संघ जो अन्तर्राष्ट्रीय पाठ परिषद् बनाते हैं द्वारा आयोजित, हवाई टिकट भी प्रायोजित करेगा।

अतिरिक्त जानकारी :

गया जिला, बिहार का मानचित्र

बौद्ध गया के पर्यटक नक्शे के लिये कृपया यहाँ क्लिक करें

कृपया भारतीय वीजा आवेदन (दूतावास संपर्क) के लिये ट्रेविसा आउटसोर्सिंग साइट देखें

कृपया टीकाकरण और स्वास्थ्य की जानकारी के लिये रोग नियंत्रण केन्द्र देखें

बोधगया में चिकित्सा सुविधा :

दिसम्बर 4–12 तक मायागौतमी फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित चिकित्सा सहायता वाट पा में (मुख्य महाविहार के बगल में) एक मुफ्त चिकित्सा तम्बू में प्रदान की जाएगी। शहर में डॉक्टर आवश्यकता पड़ने पर नैदानिक सेवाएँ (प्रयोगशाला कार्य) प्रदान कर सकते हैं। जरूरी नुस्खों की पूत्ति हेतु फार्मेसीज हैं। (अपनी प्रिसक्राइब्ड दवाइयाँ साथ लाएँ)। शहर में होमियोपैथिक और आयुर्वेदिक विकल्पों के कई प्रकार हैं। गम्भीर समस्याओं के लिये, गया अस्पताल 12 कि. मी. दूर है। शाक्यमुनि बुद्ध सामुदायिक स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र, रूट संस्थान, यात्रियों के लिये हर सप्ताह खुलता है।

आम प्रतिभागियों के लिये उपयोगी जानकारी

तिपिटका पाठ समारोह में भाग लेने के इच्छुक सभी लोगों का बहुत–बहुत स्वागत है।

पंजीकरण भिक्षु संघ के लिये आरक्षित है क्योंकि आयोजन समिति भारत के भीतर उनके यात्रा खर्च को प्रायोजित करती है, लेकिन आम आदमी स्वयं समारोह का एक महत्त्वपूर्ण और बहुमूल्य हिस्सा बनता है। तिपिटका पाठ परिषद् उन सबका स्वागत करती है जो भाग लेना चाहते हैं, और जहाँ प्रतिभागियों से प्रार्थना है कि यात्रा और आवास की अपनी खुद की व्यवस्था कर लें, जलपान और दोपहर का भोजन प्रतिदिन सामुदायिक भोजन तम्बू में प्रदान किया जाएगा।

समारोह के कार्यक्रम में प्रतिदिन पाठ शाम, धम्म प्रवचन, और समारोह के समापन के बाद एक तीर्थयात्रा शामिल है। कृपया आएँ और भारत में बुद्धधर्म के एक सच्चे त्योहार स्वरूप पठन समारोह को विकसित करते रहें।

आवास के लिये कुछ उपयोगी लिंक

- http://www.hotelscombined.com/City/Bodhgaya.htm
- http://www.tripadvisor.com/Hotels-g424922-Bodh_Gaya_Bihar-Hotels.html
- http://hotels.lonelyplanet.com/india/bodhgaya-r1973741/

तिपिटका पाठ समारोह का प्रायोजन (स्पौंसरशिप)

(अनुमानित 1500 भिक्षु संघ)

कीमत की अदायगी में सहायता हेतु प्रायोजन के प्रस्ताव या समारोह को चलाने में मदद के प्रस्तावों का हमेशा स्वागत है। यदि आप समारोह के एक पक्ष को सहारा देना चाहते हैं, कृपया प्रायोजन के अपने सुझावों के साथ हमारी परिषद् को लिखें।

सम्बन्धित प्रदेशों के प्रतिनिधियों को दान करें। अन्तर्राष्ट्रीय पाठ परिषद् को दान परिषद् में प्रतिनिधित्व प्राप्त प्रत्येक देश में प्रदेश प्रतिनिधियों को सीधे तौरपर किया जा सकता है। कोष का उपयोग समारोह में आने वाले भिक्षुओं के अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा खर्च को पूरा करने में किया जाएगा यदि आप कुछ दूसरा निर्देशित नहीं करते हैं तो। आपका दान भिक्षु महासंघ के सामने स्वीकार किया जाएगा।

स्वयंसेवा :

हम बेहद सराहना करते हैं यदि आप समारोह के विभिन्न भागों के साथ मदद करना चाहेंगे। हम पूर्णतया स्वयंसेवकों का सहयोग प्राप्त करते हैं जो कीमती महासंघ की सेवा करने के इच्छुक हैं।

आप निम्न तरीकों से मदद कर सकते हैं :

- भोजन समिति
- पंजीकरण समिति
- चाय और कॉफी सेवा
- बावर्ची
- चिकित्सा समिति
- स्थानीय भोजन वितरण समिति
- सामान्य जानकारी समिति

धन्यवाद।